Special Issue

Important Topic

66th BPSC PT Examination-2020

TOPIC:

बिहार के सांगीतिक घराने

दरभंगा घराना

दरभंगा घराना के मल्लिक ध्रुपदियों में क्षितिपाल मल्लिक, रामचतुर मल्लिक एवं सियाराम तिवारी अत्यन्त ही प्रभावशाली गायक हुए है। दरभंगा के मल्लिक गायकों में रामचतुर मल्लिक (1905-90) का जन्म अमता ग्राम में हुआ था। वर्तमान समय के ध्रुपद गायकों में इनका नाम सर्वश्रेष्ठ है। डागर घराने के गायक भी इनके गायन का लोहा मानते थे। इनके पास ध्रुपद की पुरानी बंदिशों का खजाना था। इनकी आवाज दमदार पर माधुर्यपूर्ण तथा पाटदार थी। ध्रुपद की पुरानी परंपरा के अनुकूल बंदिश के चारों तुकों के रख-रखाव, राग की शुद्धता तथा लय की उन्नत सूझ-बूझ के साथ इनका गायन भावानुकूल होता था। वर्तमान 21वीं सदी में उस्ताद फैयाज खां के बाद रामचतुर मल्लिक ही चारों पाटों के कुशल गायक हुए। ये ठुमरी, टप्पा तथा ख्याल गाने में भी कुशल थे। इनके गायन के रिकार्ड फ्रांस तथा जर्मनी में बनाए गए है। एच.एम.वी. कम्पनी ने भी इनका लॉग प्ले रिकॉर्ड बनाया है। रामचतुर मल्लिक जी को ''केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी अवार्ड'' तथा ''पद्मश्री'' की उपाधि से भी विभूषित किया गया है। खैरागढ़ संगीत विश्वविद्यालय द्वारा मल्लिक जी को ''डाक्टरेट'' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

दरभंगा घराना के अन्य गुणियों में महावीर मल्लिक, यदुवीर मल्लिक तथा विदुर मल्लिक भी अत्यन्त प्रमुख रहे। इनके पास भी ध्रुपदों का भंडार था। दरभंगा घराने के ध्रुपद गायको के नायक क्षितिपाल मल्लिक थे। क्षितिपाल मल्लिक के पूर्वज धनगाई (रोहतास)के थे। धनगाई के माणिकचंद, अनूपचंद, ज्ञानचंद और वाटूरचंद- इन चार भाईयों में माणिकचंद की वंश-परम्परा में क्षितिपाल मल्लिक का जन्म तेरहवीं पीढ़ी में हुआ था। माणिकचंद के पुत्र हस्तिराम और मस्ताराम अपने समय के श्रेष्ठ ध्रुपद गायकों में थे। क्षितिपाल मल्लिक के पूर्व पुरूष महाराजा दरभंगा के आमंत्रण पर दरभंगा आए एवं मिश्र टोला में बस गए। बाद में अमता के निकट ग्राम गंगदह में बस गए। **क्षितिपाल मल्लिक महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह तथा उनके पिता महाराजा गणेश्वर सिंह के समय से ही दरबारी गायक के रूप में प्रतिष्ठित रहे**। अमता घराना के समस्त ध्रुपद गायक यानि राजितराम मल्लिक, रामचतुर मल्लिक आदि सभी उनकी शिष्य परम्परा में आते हैं। क्षितिपाल मल्लिक के ज्येष्ठ पुत्र नरसिंह मल्लिक की असामयिक मृत्यु हो गयी। क्षितिपाल मल्लिक के द्वितीय एवं तृतीय पुत्र महावीर तथा यदुवीर मल्लिक की गणना दरभंगा घराना के श्रेष्ठ ध्रुपद गायकों में होती है। यदुवीर मल्लिक का जन्म 10 फरवरी, 1909 ई. को गंगदह में हुआ था। उनके ज्येष्ठ भ्राता महावीर मल्लिक रामचतुर मल्लिक से उम्र में दो वर्ष बड़े थे। 1936 ई. में दोनों भाइयों का युगल गान इतना प्रभावोत्पादक रहा कि उस समारोह में उन्हें ''संगीताचार्य'' की उपाधि से विभूषित किया गया। 1929 ई. में विक्टोरिया हॉल, दरभंगा में आयोजित संगीत जलसा में पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर ने उनका गायन सुनकर कहा था कि ''बिहार की मिट्टी में भी संगीत की आत्मा इतनी सजी है, इसका उन्हे अनुमान न था।'' क्षितिपाल मल्लिक तथा इसके द्वितीय पुत्र महावीर मल्लिक कुशल रचनाकार भी थे। इनके द्वारा रचे गए ध्रपदों के कुछेक उदाहरण इस प्रकार हैं-

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

ध्रुपद: *राग-खमाज-ताल चौताल*

''आली री तू अंग-अंग रंग रानी सूरत सयानि पिय
जिय मनमानी री।
सोलह कला सयानि बोलत वानी तेरी छवि
देखियत चन्द्र हूं लजानी री।
कटि केहरि केदली जंघ नासिका है कीर जाको।
श्रीफल सरोजन की यैसी छबि खानी री।
कहैं गुनि 'क्षितिपाल'' चिरंजिवि रहौ तो लो गंगाजी से पानी री।।

ध्रुपद: *राग देस-सिन्धुरा (ताल-चौताल)*

''आज आई धाई उमड़-घुमड़ नव किशोरी गोरि-मोरि
होरी खेल मदन मोहन लाल संग ये।
डफ मृदंग घन घोर-घोर सोई सराबोर केसर गुलाल
श्याम रंग ये।।
लुकत झुकत अलबेलि झनक मनक कनक रंग झटपट
लपटाय श्याम तरू तयाल अंग ये।
जप तप व्रत ध्यान धरत मुनिगन वेद भेद न पाव प्रेम
रस बस भये ''महावीर'' ढंग ये ।।''

सियाराम तिवारी जी भी दरंभगा घराना के उद्भट ध्रुपद गायकों में गिने जाते थे। इनका जन्म अमता में 1919 ई. में हुआ। लयकारी पर इन्हें आसाधारण अधिकार प्राप्त हुआ था। अच्छे से अच्छे तैयार पखावजी भी इनकी गायकी के समक्ष नतमस्तक रहते थे। बुलंद एवं सुरीली आवाज के धनी सियाराम तिवारी जी की गणना देश के शीर्षस्थ ध्रपदियों में की जाती है। एच.एम.वी. ने इनका भी लॉग प्ले रिकॉर्ड बनाया है। देश-विदेश में इन्हें सम्मान प्राप्त हो चुके हैं जिनमें ''पदमश्री'' तथा ''केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी'' की ''रत्न सदस्यता'' प्रमुख है।

दरभंगा के मल्लिक ध्रुपदियों की परम्परा अत्यन्त पुरानी है। मल्लिक घराने के पूर्व पुरूषों में राधाकृष्ण एवं कर्ताराम दो भाई हुए जिन्होंने ध्रुपद की शिक्षा भूपत खा महारंग से लगभग 30 वर्षो तक पायी। राधाकृष्ण तथा कर्ताराम दोनों भाई मिथिला नरेश माधव सिंह (1775/1776-1807ई.) के आश्रय में पश्चिम से आए थे। कतिपय विद्वानों का मत है कि पहले अवध दरबार में मुलाजिम थे। लेकिन कुछ लोग इन्हें पटना के नवाब के आश्रित मानते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि इन दोनों भाइयों ने अपनी तालीम समाप्त करने के उपरांत पटना के नवाब का आश्रय प्राप्त किया। दरभंगा महाराज माधव सिंह इनके संगीत से इतने प्रभावित हुए कि इन्हें अमता ग्राम की जागीर प्रदान कर दी थी। जागीर के रूप में इन्हें अमता ग्राम में लगभग 1200

Special Issue
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

बीघा जमीन एवं अमता गंगदह और नारायण दोहट इन तीनों गांवों की मिल्कियत प्राप्त हुई। कालान्तर में ये दोनों भाई स्थाई रूप से एकमात्र दरभंगा दरबार के गायक नियुक्त कर दिए गए। तभी से इस परम्परा के सभी संगीत-कलाकारों को वंशानुगत रूप से दरबार की ओर से आश्रय प्राप्त होता रहा। राधाकृष्ण एवं कर्तीराम की मृत्यु के बाद उनके वंशज अपनी जागीर के क्षेत्र अमता (विष्णुगांगी) में रहने लगे।

दरभंगा घराने में ध्रुपद गायन के साथ बीन एवं पखावज वादन की परम्परा भी रही है। इसमें आजकल बीन का प्रचार नहीं होता है एवं इस घराने की प्रसिद्धि विशेष रूप से ध्रुपद-गायकी के क्षेत्र में ही हुई है। इस परम्परा का हस्तान्तरण मुख्य रूप से वंशानुक्रम रूप में ही हुआ है। परम्परा के विशिष्ट कलाकारों में धर्मपाल (ध्रुपद), निहाल सिंह (बीनकार), क्षितिपाल (ध्रुपद गायक), राजितराम (ध्रुपदगायक), बाबू बेनी सिंह (ध्रुपद गायक), भीम मल्लिक (पखावजी), बिसन देव पाठक (पखावजी), देवकी नन्दन पाठक (पखावजी) के नाम उल्लेखनीय हैं। इनमें से धर्मपाल जी अपनी गंभीर गायकी तथा आलाप के लिए प्रसिद्ध थे।

राजितराम गायक होने के साथ पद रचना भी स्वयं करते थे। ये बृज एंव संस्कृत के विद्वान थे तथा फारसी भी जानते थे। उन्होंने ''भक्त विनोद'' तथा ''राग रत्नाकर'' नामक पुस्तकें भी लिखी है। बाबू बेनी सिंह (नूनू बाबू) घराने में अपनी पल्लेदार आवाज के लिए प्रसिद्ध रहे। उनकी रचनाओं में भक्ति पक्ष का प्राधान्य माना जाता था। ये काफी विलम्बित लय में गाते थे। यह बराबर या दुगुन की लय में ही लयकारी करते थे एवं गमक का प्रयोग सर्वत्र बाहुल्य के साथ करते थे। गमक की बांट की दृष्टि से क्षितिपाल जी के बाद उन्हीं का स्थान माना जाता है। इनके पास विभिन्न रागों और तालों के पदों का अच्छा संग्रह था।

इस प्रकार दरभंगा के अमता घराने के मल्लिक ध्रुपदियों में रामनेवाज, सीताराम, राधाकृष्ण, कर्त्तीराम, भीम, मल्लिक, गजराज मल्लिक, लोचन मल्लिक, कन्हैयालाल नेहाल, राजाराम राजितराम मल्लिक, रामचतुर मल्लिक, रामेश्वर पाठक, विदुर मल्लिक, सियाराम तिवारी, अभय नारायण मल्लिक का नाम प्रसिद्ध हुआ।

दरभंगा घराने की विशेषताएं

- दरभंगा घराने की गायकी अपने दमखम एवं जोशीली गायकी के कारण ध्रुपद क्षेत्र में अपनी अलग पहचान रखती है। इस घराने की आवाज, लगाव का ढंग अत्यन्त बलपूर्ण, जोरदार, ठोस, पाटदार खुला हुआ, गंभीर एवं तीखी जवारीयुक्त एवं ओजपूर्ण युक्त होता है। आवाज में मींड़ एवं आस की प्रधानता रहती है एवं आवाज में खुलेपन के साथ मींड़ एवं घसीट का प्रयोग बहुतायत किया जाता है। मींड व घसीट के कारण आवाज का निर्विरोध प्रयोग किया जाता है।
- इस घराने की गायकी में स्पष्टता एवं शुद्धवाणी का प्रयोग होता है। आवाज का लगाव बलपूर्वक होने के कारण आलापों में आवाज का प्रयोग करने से प्रारंभ में हल्ली गमक अथवा बल से एक छोटी तान या खटके का प्रयोग बारीकी से देखने में परिलक्षित होता है। इसलिए मींडों का प्रयोग बलपूर्ण छूट एवं हकार अथवा हुडक के साथ किया जाता है। छूट का काम भी बलपूर्ण ढंग से

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

बहुतायत रूप से ही प्रयुक्त होता है। स्वर की लोट-पलट काफी देखने को मिलती है।

- इस घराने की गायकी चतुरंग अर्थात् चारों पाटों की गायकी अर्थात् ध्रुपद, धमार, ख्याल ठुमरी की मानी गई है। ध्रुपद गायकी को ईश्वर आराधना मानते हुए भी इस घराने की गायकी जोशीली होने के कारण उसमें भक्ति व शांत रस की अपेक्षा ओज गुण व वीररस का ज्यादा आधिपत्य प्रतीत होता है।
- इस परम्परा में कुछ ऐसे रागों का प्रचार भी रहा है जो अन्यत्र प्राप्त नहीं है जैसे- श्वेत मल्हार, विनोद, खमाज बहार, प्रमोल तथा प्रदौल।
- इस परम्परा में पहले भैरव के स्वरों से प्रशिक्षण प्रारंभ होता था, किन्तु अब बिलावल की एवं यमन की स्वरावलियों से होता है। स्वर ज्ञान हेतु प्रारंभ में वर्षो तक एक-एक स्वर के सीधे प्रयोग पर बल देते हैं एवं साथ ही पलटे भी सिखाए जाते है। ध्रुपद-धमार की दृष्टि से यह घराना बहुत समृद्ध माना जाता है।
- पदों का गायन भी खुली आवाज एवं दमखम के साथ किया जाता है। पद ज्यादा स्तुतिपरक होते है। पदगायन में आवाज का क्रम टूटता नहीं हैं एवं मीड़ों, कणों के साथ गमक-युक्त आवाज के साथ पदगायन होता है। ध्रुपद की लयकारियां जितनी अनुशासित एवं गतिबद्ध होती है उतनी अन्य घरानों की नहीं।
- इस घराने के गायक दुगुन से सोलहगुन या इसके समकक्ष लय के प्रयोग को ही विभिन्न मात्राओं से उठाकर विविध आयामी लयकारी का प्रयोग अत्यन्त कुशलतापूर्वक रूप से प्रस्तुत करते है। लयकारी प्रयोग में बोलोच्चार इतना स्पष्ट होता है कि उसमें छंदों को स्पष्ट देखा जा सकता है।
- इस घराने की एक निराली विशेषता यह है कि अन्य घरानों से अलग इस घराने में लयकारी के बाद कभी सम पर सीधे पहुंचने पर गायक का आग्रह नहीं रहता अपितु नई-नई तिहाइयों का प्रयोग प्रायः इस घराने के सभी गायक करते हैं। इन तिहाइयों की खास विशेषता यह है कि ये तिहाईयां छोटी होने की अपेक्षा बहुधा लम्बी, चक्करदार व तीन आवृत्ति (नवहक्का) युक्त होती है।
- इस घराने के गायक इन तिहाईयों के बाद प्रायः कुशलतापूर्वक ढंग से सम-विषम, अतीत-अनागत इत्यादि का प्रयोग दिखाते हैं।

उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर इस घराने में प्रधानतया खण्डार वाणी के दिग्दर्शन होने के साथ ही कभी-कभी गोबरहारी वाणी का सहयोग भी लिया जाता है।

By

NUTAN SHUKLA

Co-Writer- **बिहार: सामान्य विवरणिका**

BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

NEW DELHI - 110084

What's app No.- 9355167891 Facebook:- BIHAR NAMAN

Telegram Link:- http:t.me/biharnaman

Email Id:- biharnaman@gmail.com

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE